

सोनभद्र जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का रूपांतरण

रवि प्रकाश सिंह¹, डॉ. बी. आर. पंत²

¹ शोधार्थी, भूगोल विभाग, एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी

² प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी

सारांश:

सोनभद्र जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप का दशकीय रूपांतरण जनसंख्या वृद्धि, प्रौद्योगिकी विकास और सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं के कारण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। भूमि मानव जीवन की आधारशिला है, जिस पर उसकी समस्त गतिविधियाँ आधारित होती हैं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि भूमि का उपयोग समय के साथ निरंतर बदलता रहता है, विशेषतः जब मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उसे परिमार्जित करता है। भूमि के नौ प्रमुख संवर्ग जैसे- वन, कृषियेतर उपयोग, परती भूमि, बंजर भूमि, ऊसर भूमि, वृक्ष-बागान, चारागाह, कृष्य बेकार भूमि एवं शुद्ध बोया गया क्षेत्र में समय के साथ महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। वन भूमि में कमी और शुद्ध बोया गया क्षेत्र में वृद्धि इस बात की पुष्टि करती है कि खाद्य उत्पादन और आवासीय जरूरतों के लिए भूमि पर दबाव बढ़ा है। भूमि उपयोग की यह प्रक्रिया न केवल पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बन रही है, बल्कि सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं को भी प्रभावित कर रही है। भूमि की गुणवत्ता और उत्पादकता का सीधा संबंध उपयोग की गहनता से है, जिसे ध्यान में रखते हुए योजनाबद्ध और संतुलित भूमि प्रबंधन की आवश्यकता है, ताकि सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द: भूमि उपयोग, रूपांतरण, वन भूमि, शुद्ध बोया गया क्षेत्र, जनदबाव, कृष्य बेकार भूमि प्रस्तावना

प्राकृतिक संसाधनों में भूमि महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। भूमि पर ही मनुष्य की संपूर्ण सामाजिक-आर्थिक गतिविधियाँ संपादित होती हैं। मानव भूगोल के अध्ययन में गतिशील मानव प्रकृति के संदर्भ में भूमि उपयोग की रूपांतरण स्थिति का समय-समय पर अध्ययन एवं विश्लेषण मानव विकास के लिए नितांत आवश्यक होता है। मनुष्य भूमि संसाधन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य संबंधित होता है। सिंह एवं तिवारी(2006) के अनुसार जब मानव भूमि को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए परिवर्तित एवं परिमार्जित करता है तो वह आर्थिक इकाई संसाधन में परिणत हो जाती है और भूमि से जब उत्पादक कारक के रूप में भोज्य पदार्थ उद्योगों के लिए कच्चा माल शक्ति प्रदायी संसाधन प्राप्त होते हैं जिसका उपयोग जन जीवन एवं आर्थिक विकास हेतु किया जाता है तो उसे भूमि को उपयोगी पदार्थ के रूप में संज्ञा प्रदान की जाती है। बढ़ती हुई जनसंख्या एवं प्रौद्योगिकी विकास से भूमि उपयोग के प्रतिरूप में सदैव परिवर्तन हो रहा है। कृषि योग्य भूमि का क्षेत्रफल लगातार बढ़ रहा है और भूमि उपयोग जटिल शस्त्र विविधता गहनता के साथ लाभ उन्मुखी होता जा रहा है। भारत में सामान्यतः भूमि उपयोग को नौ संवर्गों में विभक्त किया जा सकता है 1 वन 2 कृषियेतर कार्यों में लगी भूमि 3 वर्तमान परती भूमि 4 अन्य परती भूमि 5 बंजर एवं खेती अयोग्य भूमि 6 वृक्षों एवं बागों की भूमि 7 चारागाह भूमि 8 कृष्य बेकार भूमि 9 शुद्ध बोया गया भूमि। इस प्रकार मनुष्य के विविध क्रियाकलापों के कारण भूमि उपयोग संवर्ग का विभाजन हुआ है। यही भूमि उपयोग मनुष्य के लिए सामाजिक आर्थिक जरूरतों को पूरा करते हैं।

वारलोव (1954) के अनुसार भूमि संसाधन का उपयोग जन दबाव के परिपेक्ष में उत्पन्न समस्याओं एवं चुनौतियों की दृष्टि से आवश्यक नियोजन का महत्वपूर्ण अंग भी है। पंत (1988, 1991, 1994), पंत एवं अन्य

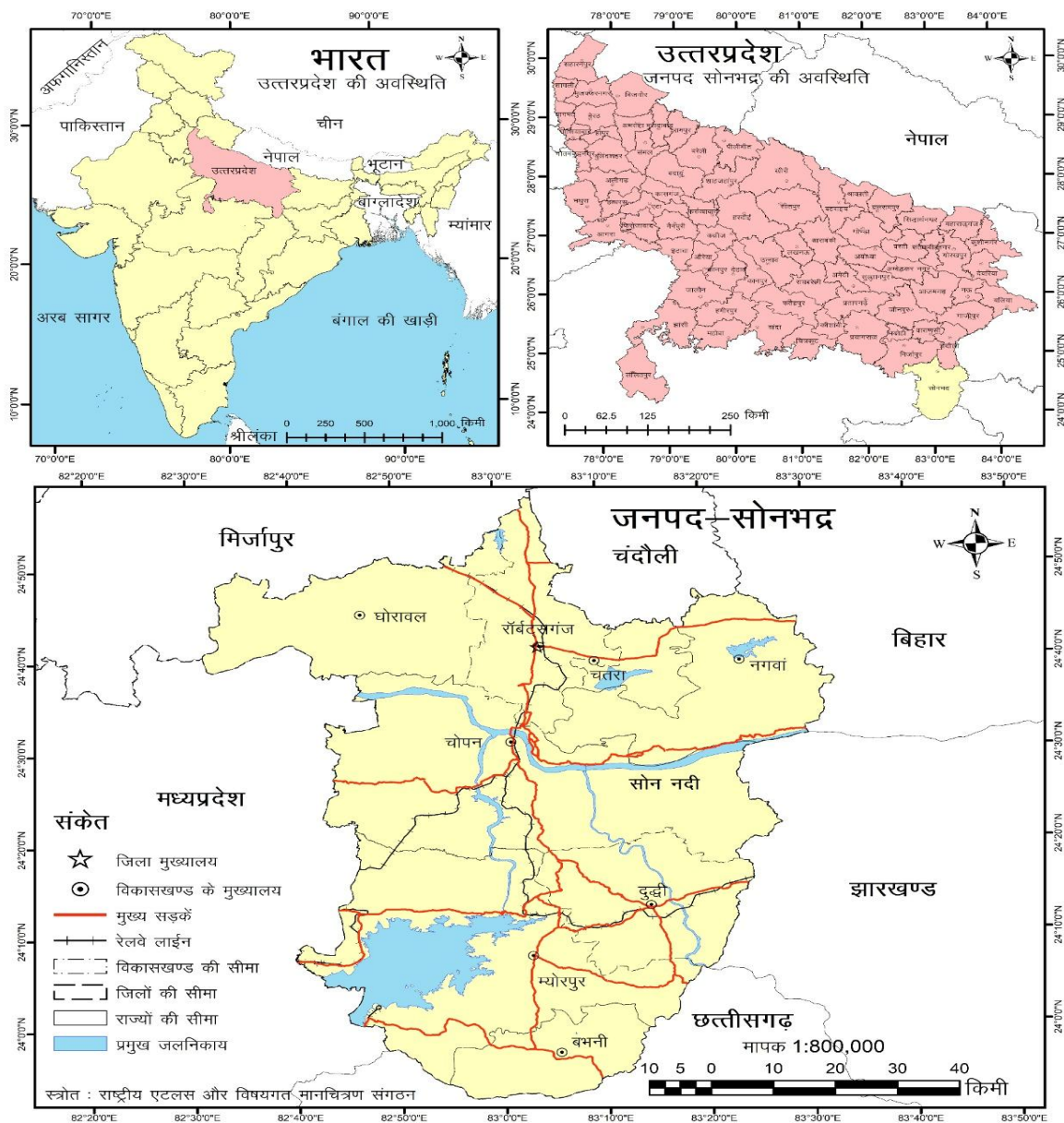
(1988, 1991) ने भूमि की गुणवत्ता के अनुसार भूमि उपयोग को संदर्भित किया है भूमि की गुणवत्ता अच्छी है तो उसका उपयोग मनुष्य समाज व्यापक अर्थ में करता है क्योंकि भूमि उत्पादकता का संबंध गहनता से संयुक्त है।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद सोनभद्र का भौगोलिक विस्तार $23^{\circ}52'$ से $25^{\circ}32'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^{\circ}72'$ से $83^{\circ}33'$ उत्तर अक्षांश तथा $82^{\circ}72'$ से $83^{\circ}33'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जनपद का क्षेत्रफल 6788 वर्ग किमी. है। जनपद सोनभद्र उत्तर प्रदेश राज्य का क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से दूसरा सबसे बड़ा जिला है। जनपद सोनभद्र का उदय, 1989 में जनपद मिर्जापुर के विभाजन के फलस्वरूप हुआ है। इसकी भौगोलिक सीमा झारखंड (पूर्व), बिहार (उत्तर-पूर्व), छत्तीसगढ़, (दक्षिण) एवं मध्य प्रदेश (पश्चिम) से स्पर्श करती है। सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से यह एक पिछड़ा क्षेत्र है।

जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 18,62,559 है। जिसमें 3,14,342 नगरीय जनसंख्या तथा 15,48,217 ग्रामीण जनसंख्या है। क्षेत्र का सामान्य जनघनत्व 270 व्यक्ति/वर्ग किमी. है।

मानचित्र- अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक अवस्थिति



प्रशासनिक दृष्टि से जनपद सोनभद्र को आठ विकासखण्डों में विभक्त किया गया है जो निम्नवत् हैं- विकासखण्ड घोरावल, राबर्ट्सगंज, चतरा, चोपन, म्योरपुर, दुझी, बभनी

विकासखण्ड राबर्ट्सगंज में जनपद का मुख्यालय स्थापित किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य जनपद सोनभद्र में विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप एवं दशकीय (2009-2019) रूपांतरण का अध्ययन करना।

विधितंत्र

यह शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। यह द्वितीयक आंकड़े जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद सोनभद्र से लिए गए हैं। यह अध्ययन जनपद स्तर पर भूमि उपयोग के विविध संवर्ग में दशकीय (2009-2019) रूपांतरण एवं विकासखंडवार वितरण पर केंद्रित है। अध्ययन विषयवस्तु से संबंधित एकत्रित आंकड़ों का अध्ययन और विश्लेषण मानचित्र, तालिका, पाई चित्र आदि के द्वारा किया गया है।

जनपद सोनभद्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप का रूपान्तरण

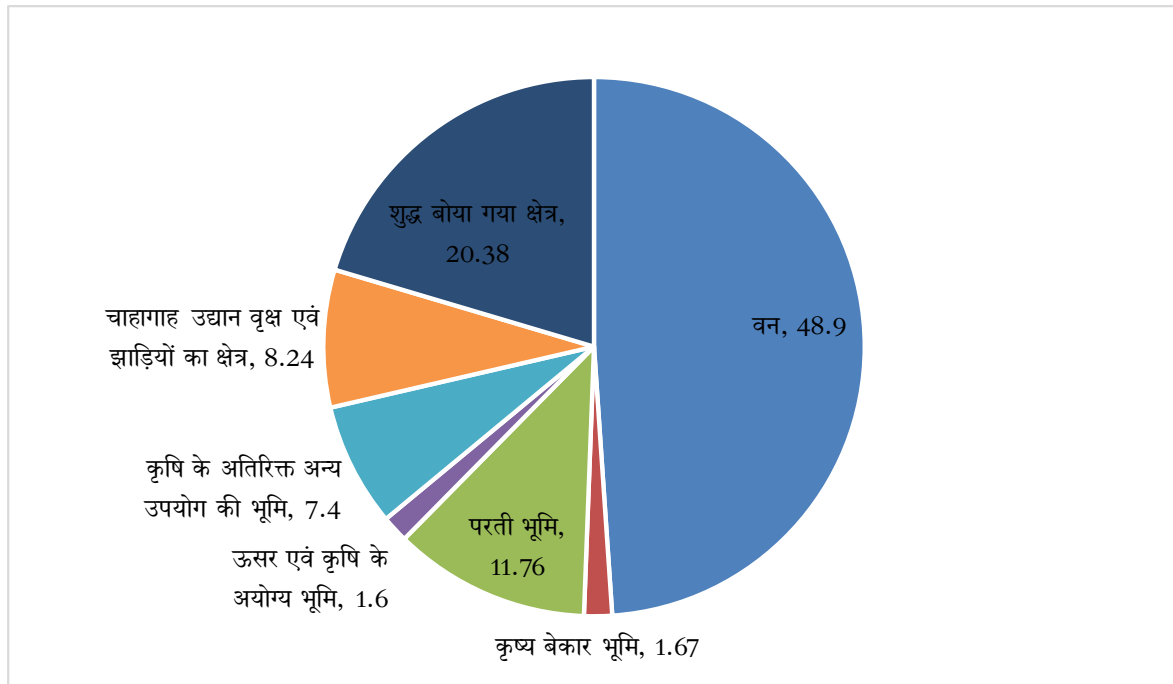
तालिका-1: जनपद सोनभद्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप का रूपान्तरण, 2009 -2019

भूमि संवर्ग	2009		2019		रूपान्तरण	
	हेक्टेयर	%	हेक्टेयर	%	हेक्टेयर	%
वन	333009	48.9	325720	47.83	-7289	-2.19
कृष्य बेकार भूमि	11384	1.67	12537	1.84	1153	10.13
परती भूमि	80195	11.76	41500	6.08	-38695	-48.25
ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	10907	1.6	13012	1.91	2105	19.29
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	50458	7.4	60110	8.82	9652	19.12
चाहागाह उद्यान वृक्ष एवं झाड़ियों का क्षेत्र	56193	8.24	35579	5.21	-20614	-36.68
शुद्ध बोया गया क्षेत्र	138815	20.38	192503	28.26	53688	38.67
जनपद कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल	680961	100	680961	100	0	0

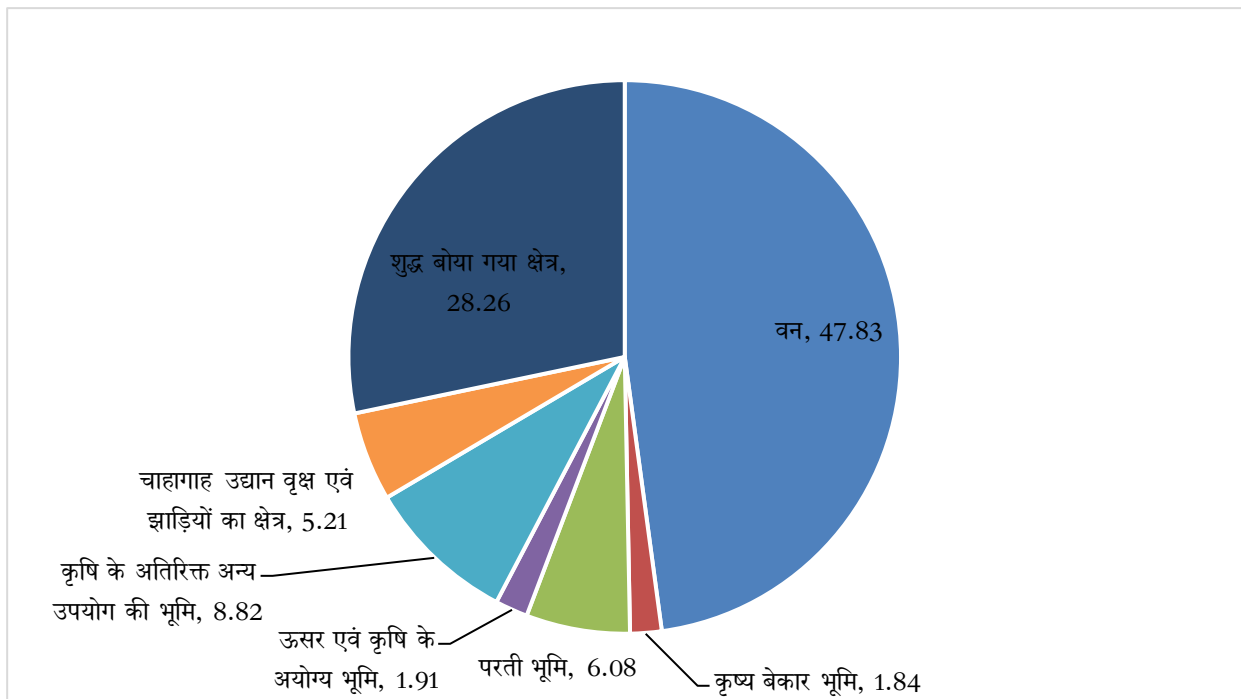
स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद सोनभद्र, 2008-2009 से 2018-2019

तालिका-1 के अध्ययन के अनुसार जनपद सोनभद्र का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 680961 हेक्टेयर है।

वन भूमि संवर्ग के क्षेत्रफल के संदर्भ में जनपद में दशकीय रूपांतरण (-2.19%) की प्राप्त स्थिति ऋणात्मक है अर्थात् जनपद में वन भूमि के क्षेत्रफल में कमी हुई है वन क्षेत्र की कमी का होना पर्यावरण दृष्टि से चिंता जनक है इस स्थिति के प्रमुख कारणों में जनपद में जनदबाव का बढ़ना है जन दबाव के कारण उनके यातायात, भरण पोषण एवं आवास के परिप्रेक्ष्य में वन भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है।



ग्राफ 1 - भूमि उपयोग प्रतिरूप, 2008-2009



ग्राफ 2- भूमि उपयोग प्रतिरूप, 2018-2019

कृष्य बेकार भूमि एवं ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि का विश्लेषण किया जाय तो इनके दशकीय रूपांतरण की स्थिति क्रमशः (10.13%) एवं (19.29%) धनात्मक है। जिसका प्रमुख कारण अध्ययन क्षेत्र में कृषकों की अक्षम स्थिति, भूमि विवाद, असिंचित भूमि एवं कृष्येतर क्रियाओं का बढ़ना है।

परती भूमि के संदर्भ में दशकीय रूपांतरण (-48.25%) की स्थिति ऋणात्मक। इससे स्पष्ट है कि जनपद में प्रति भूमि लगातार घट रहा है जनपद में बढ़ती हुई आबादी के परिणाम स्वरूप परती भूमि पर विकसित वैज्ञानिक

विधियों का प्रयोग करके, उर्वरता स्तर को संतुलित करके भूमि की चौमासा स्थिति को संतुलित करके अधिक से अधिक कृषि कार्य किया जा रहा है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जनपद सोनभद्र में इसका दशकीय रूपांतरण (19.12%) धनात्मक स्थिति में है जिसका प्रमुख कारण जनपद में जनसंख्या का बढ़ना है। इस प्रकार बढ़ती हुई जनसंख्या की वजह से सांस्कृतिक भूदृश्यों, सेवा केंद्र जैसे अधिवास, अस्पताल, बाजार आदि का विकास हो रहा है।

चारागाह उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों की भूमि संवर्ग का दशकीय रूपांतरण (-36.68%) ऋणात्मक स्थिति में है। अर्थात् जनपद में जनसंख्या के बढ़ने से खाद्य आपूर्ति आवास को पूरा करने के लिए अधिकतर भूमियों को कृषिगत भूमि में बदला जा रहा है।

शुद्ध बोया गया भूमि संवर्ग पर दृष्टिगत अवलोकन से ज्ञात है कि इसका दशकीय रूपांतरण (38.68%) धनात्मक है। यह रूपांतरण अन्य भूमि संवर्गों में सबसे अधिक धनात्मक है। क्योंकि जनपद में बढ़ता हुआ जनदबाव के वजह से खाद्यान्न आपूर्ति तथा अन्य सामाजिक आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया जा रहा है। जिसमें आधुनिक प्रौद्योगिकी का सहयोग भी मिल रहा है।

विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2009)

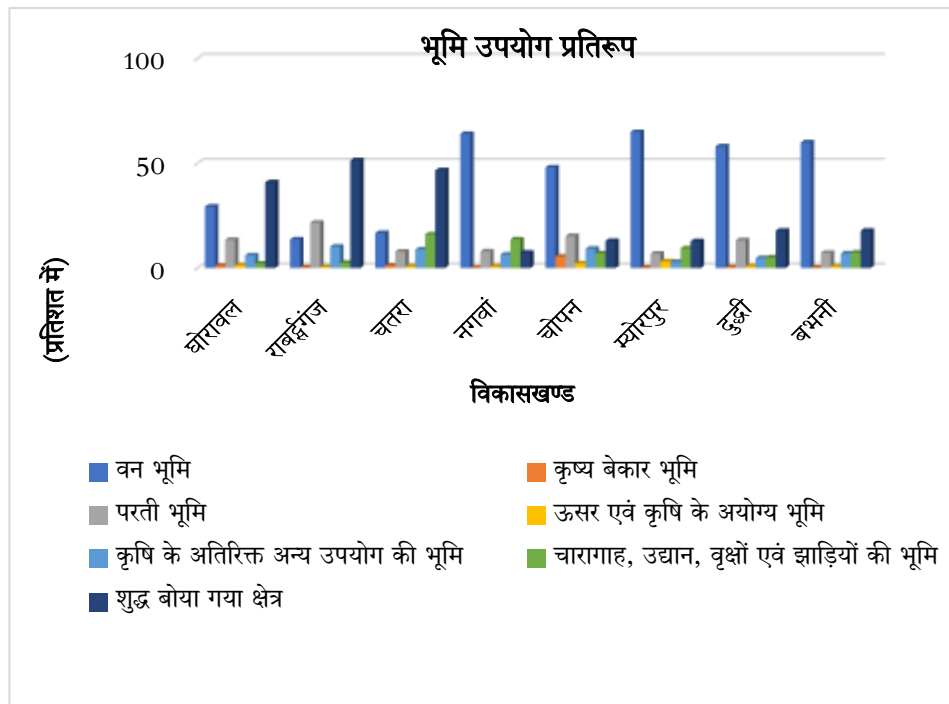
तालिका-2: जनपद सोनभद्र में विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2009)

विकासखंड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हेक्टे.)	वन भूमि (%)	कृष्य बेकार भूमि (%)	परती भूमि (%)	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि (%)	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि (%)	चारागाह, उद्यान, वृक्षों एवं झाड़ियों की भूमि (%)	शुद्ध बोया गया क्षेत्र (%)
घोरावल	83530	29.23	0.98	13.39	1.38	6.01	2.16	40.86
राबर्द्धगंज	48484	13.63	0.38	21.59	0.45	10.16	2.44	51.34
चतरा	26127	16.68	1.2	7.84	0.75	8.86	16.04	46.57
नगवां	92618	63.96	0.05	7.88	0.74	6.35	13.67	7.32
चोपन	170786	47.97	5.48	15.23	2.18	9.21	6.96	12.94
म्योरपुर	125086	64.82	0.16	6.86	3.12	2.90	9.36	12.76
दुझी	68098	57.98	0.41	13.22	0.84	4.76	5.02	17.73
बभनी	59031	59.89	0.16	7.20	0.70	6.92	7.31	17.80

योग जनपद	673760	49.42	1.68	11.70	1.62	6.65	8.26	20.57
ग्रामीण								
योग जनपद	7201	00	0.80	18.67	0.20	77.68	00	2.62
नगरीय								
योग जनपद	680961	49.42	1.67	11.78	1.60	7.41	8.26	20.38

स्रोत - जिला सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, जनपद सोनभद्र, 2008-09

तालिका 2 के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2009 में जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 680961 हेक्टेयर है।



ग्राफ-3: जनपद सोनभद्र में विकासखण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2009)

वनभूमि के दृष्टिगत जनपद सोनभद्र में 49.42 प्रतिशत क्षेत्र वन भूमि का है। विकासखंड राबद्धगंज (13.63%) में सबसे कम वन भूमि है। यह विकासखंड जिला मुख्यालय वाला क्षेत्र है वहीं सबसे अधिक वनभूमि वाला विकासखंड म्योरपुर (64.82%) है यह विकासखंड जनपद सोनभद्र के सुदूर सोन घाटी निम्न पठारी क्षेत्र का भाग है जहां वनस्पतियां अधिक विस्तृत है। शेष विकासखंड चतरा (18.68%), घोरावल (29.23%), चोपन (47.97%), दुड्डी (57.89%), बभनी (59.89%), नगवां (63.96%) विकासखंड म्योरपुर (64.82%) की ओर उन्मुख है।

कृष्य बेकार भूमि के दृष्टिगत जनपद स्तर पर 1.67 प्रतिशत क्षेत्र कृष्य बेकार भूमि का है जिसका 0.80 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में तथा 1.68 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में है। कृष्य बेकार भूमि के संदर्भ में विकासखंड नगवां (0.05%) सबसे निम्न स्थिति में है जबकि विकासखंड चोपन (5.48%) उच्च स्थिति में है। शेष विकासखंड

म्योरपुर (0.16%), बभनी (0.16%), राबर्द्धगंज (0.38%), दुद्धी (0.41%), घोरावल (0.98%) एवं चतरा (1.2%) आरोही क्रम में उन्मुख अवस्था में है।

परती भूमि के दृष्टिगत जनपद स्तर पर 11.78% परती भूमि का है जिसका 18.67 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में तथा 11.70% भाग ग्रामीण क्षेत्रों में है। परती भूमि के संदर्भ में विकासखंड म्योरपुर (6.86%) सबसे निम्न स्थिति में है जबकि विकासखंड राबर्द्धगंज (21.59%) उच्च स्थिति में है। शेष विकासखंड बभनी (7.20%), चतरा (7.84%), नगवां (7.88%), दुद्धी (13.22%), घोरावल (13.39%) एवं चोपन (15.23%) आरोही क्रम में विकासखंड राबर्द्धगंज (21.59%) की ओर उन्मुख है।

ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के संदर्भ में जनपद स्तर पर 1.60 प्रतिशत क्षेत्र ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का है जिसका 0.20 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में तथा 1.62 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में है। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के संदर्भ में विकासखंड राबर्द्धगंज (0.45%) सबसे निम्न स्थिति में है जबकि विकासखंड म्योरपुर (3.12%) उच्च स्थिति में है। शेष विकासखंड बभनी (0.70%), नगवां (0.74%), चतरा (0.75%), दुद्धी (0.84%), घोरावल (1.38%), एवं चोपन (2.18%), आरोही क्रम में विकासखंड म्योरपुर की ओर उन्मुख है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के दृष्टिगत जनपद स्तर पर 7.41 प्रतिशत क्षेत्र कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि का है जिसका 77.68 प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में तथा 6.65 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग भूमि के संदर्भ में विकासखंड म्योरपुर (2.90%) सबसे निम्न स्थिति में है जबकि विकासखंड राबर्द्धगंज (10.16%) उच्च स्थिति में है। शेष विकासखंड दुद्धी (4.76%), घोरावल (6.01%), नगवां (6.35%), बभनी (6.92%), चतरा (8.86%) एवं चोपन (9.21%) आरोही क्रम में विकासखंड राबर्द्धगंज (10.16%) की ओर उन्मुख है।

चारागाह उद्यान वृक्ष एवं झाड़ी भूमि के संदर्भ में जनपद स्तर पर 8.26 प्रतिशत क्षेत्र चारागाह उद्यान वृक्ष एवं झाड़ी भूमि का है इस भूमि का विस्तार नगरीय क्षेत्रों में नहीं है। चारागाह उद्यान वृक्ष एवं झाड़ी भूमि के संदर्भ में विकासखंड राबर्द्धगंज (2.44%) सबसे निम्न स्थिति में है जबकि विकासखंड चतरा (16.04%) उच्च स्थिति में है। शेष विकासखंड दुद्धी (5.02%), चोपन (6.96%), बभनी (7.31%), घोरावल (8.16%), म्योरपुर (9.36%) एवं नगवां (13.67%) आरोही क्रम में उन्मुख है।

विकासखंड वार भूमि उपयोग (2019)

तालिका-3 में जनपद सोनभद्र में विकासखंड वार भूमि उपयोग का स्वरूप अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट है कि जनपद का कुल प्रतिवेदन क्षेत्रफल 680961 हेक्टेयर है। वन क्षेत्र के दृष्टिगत जनपद के कुल आठ विकास खंडों में से विकासखंड राबर्द्धगंज (12.32%) एवं चतरा (16.24%) का वन क्षेत्र निम्न स्तर (20 प्रतिशत से कम) पर पाए जाते हैं क्योंकि इन विकास खंडों में शहरी प्रभाव एवं जनदबाव के कारण वन भूमि का कृषि भूमि में उपयोग और कृषि के अतिरिक्त अन्य भूमि में प्रयोग अधिक हो रहा है। वहीं विकास खंड घोरावल (20.07%) का वन क्षेत्र मध्यम स्तर (20% से 40%) की स्थिति में है। शेष विकासखंड क्रमशः चोपन (51.35%), म्योरपुर (56.81%), दुद्धी (57.70%), बभनी (56.56%) एवं नगवां (63.82%) उच्च स्तर (40 प्रतिशत से अधिक) की स्थिति में है।

क्योंकि ये सभी विकासखंड कैमूर घाटी पहाड़ी एवं नदी घाटी प्रभावित क्षेत्र हैं जहां पर वन अपेक्षाकृत अन्य विकास खंडों से अधिक है। पूरे जनपद में वन भूमि 48.00 प्रतिशत है।

तालिका-3: जनपद सोनभद्र में विकासखण्डवार भूमि उपयोग का स्वरूप, 2019

विकासखंड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हेक्टे.)	वन भूमि	कृष्य बेकार भूमि	परती भूमि	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह, उद्यान, वृक्षों एवं झाड़ियों की भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
		(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
घोरावल	82141	29.07	2.07	6.09	1.43	8.09	6.03	47.17
राबर्द्गंग	52469	12.32	0.77	11.83	1.52	12.16	1.84	59.52
चतरा	29389	16.24	2.11	7.36	0.62	16.94	10.11	46.57
नगवां	90786	63.82	2.16	7.29	0.60	7.06	8.4	10.64
चोपन	156045	51.35	1.41	7.66	5.34	9.63	4.6	19.97
म्योरपुर	139610	56.81	1.58	4.24	1.03	8.09	4.6	23.63
दुद्धी	66929	57.70	2.32	2.48	0.43	7.05	3.55	26.42
बभनी	61136	56.56	2.40	2.59	0.31	5.22	4.984	27.88
योग जनपद ग्रामीण	678505	48.00	1.79	6.06	1.91	8.64	5.23	28.32
योग जनपद नगरीय	2456	0	15.6	12.7	1.42	58.22	0.4	11.52
योग जनपद	680961	48.00	1.84	6.08	1.91	8.82	5.2	28.26

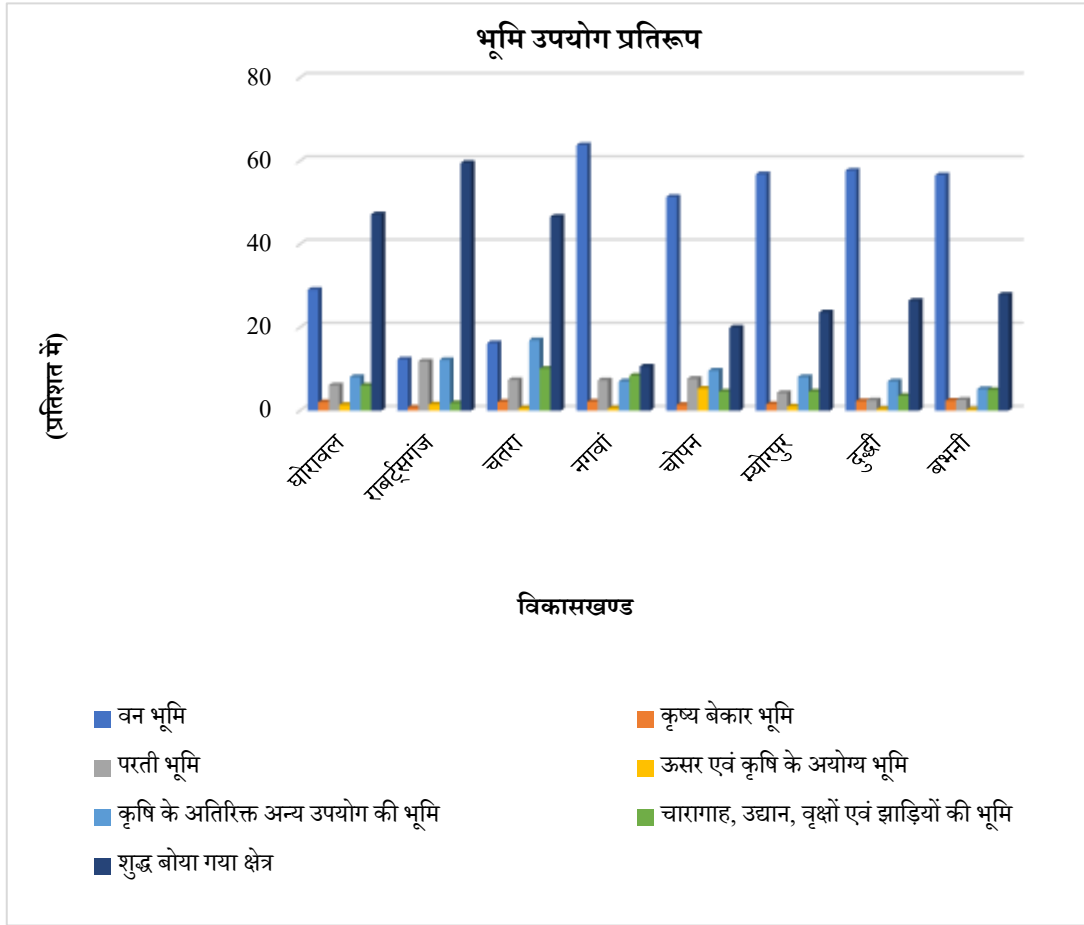
स्रोत: जिला सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग जनपद सोनभद्र । 2018-2019

जनपद सोनभद्र में कृष्य बेकार भूमि के दृष्टिगत विकासखंड राबर्द्गंग (0.77%) निम्न स्तर (1% से कम) में है वहीं क्रमवत विकासखंड चोपन एवं म्योरपुर मध्यम (1% से 2%) स्थिति में है अन्य सभी विकासखंड क्रमवत घोरावल (2.07%), नगवां (2.16%), दुद्धी (2.32%), बभनी (2.40%) उच्च स्तर (2% से अधिक) की स्थिति में है।

जनपद सोनभद्र में परती भूमि के दृष्टिगत विकासखंड दुद्धी (2.48%), बभनी (2.59%) निम्न स्तर (4 प्रतिशत से कम) पर है। वहीं विकासखंड घोरावल (6.09%), नगवा (7.29%), चतरा (7.36%) चोपन (7.66%) मध्य में स्थिति (4% से 8%) में है। शेष विकासखंड राबर्द्गंग (11.83%) उच्च स्तर (8% से ऊपर) पर है।

जनपद सोनभद्र में ऊसर एवं कृषि के योग्य भूमि के संदर्भ में विकासखंड बभनी (0.31%), दुद्धी (0.43%), नगवा (0.60%), चतरा (0.62%) निम्न स्तर (1% से नीचे) पर हैं। वहीं म्योरपुर (1.03%), घोरावल (1.43%) और

राबर्टगंज (1.52%) मध्य (1% से 2%) स्थिति में है। शेष विकासखंड चोपन (5.34%) उच्च स्तर (2% से अधिक) के स्थिति में है।



ग्राफ-4: जनपद सोनभद्र में विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2019)

जनपद सोनभद्र में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के संदर्भ में विकासखंड बभनी (5.22%), दुड्डी (7.05%), नगवा(7.0%) निम्न स्तर (8%) में आते हैं तथा म्योरपुर (8.09%), घोरावल (8.9%), चोपन (9.63%), राबर्टगंज (12.16%), मध्य स्तर (8% से 16%) में है शेष विकासखंड चतरा (16.94%) उच्च स्तर (16% से अधिक) की स्थिति में है।

जनपद सोनभद्र में चारागाह उद्यान वृक्ष एवं झाड़ियों के दृष्टिगत विकासखंड राबर्टगंज (1.84%), दुड्डी (3.55%), चोपन (4.6%), म्योरपुर (4.6%), बभनी (4.98%) निम्न स्तर (5% से कम) की स्थिति में है वहीं घोरावल (6.03%), नगवा (8.4%) मध्य स्तर (5% से 10%) पर हैं शेष विकासखंड चतरा (10.11%) की स्थिति उच्च स्तर (10% से अधिक) पर है।

जनपद सोनभद्र में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल की दृष्टि से नगवा (10.64%), चोपन (19.97%) निम्न स्तर (20% से कम) पर हैं म्योरपुर (23.63%), दुड्डी (26.42%), बभनी (27.88%) मध्यम स्तर (20% से

40%) पर है। शेष विकासखंड चतरा (46.57%), घोरावल (47.17%), राबड़गंज (59.52%), उच्च स्तर (40% से अधिक) पर है।

विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप के दशकीय (2009 से 2019) रूपांतरण

तालिका 4 के अनुसार वन भूमि उपयोग प्रतिरूप के दशकीय (2009 से 2019) रूपांतरण के क्रम में जनपद स्तर एवं योग ग्रामीण स्तर (-2.9%) पर ऋणात्मक रूपांतरण हुआ है जिसका प्रमुख कारण जनपद में जनदबाव का बढ़ना है। जनपद के सभी विकासखंड में भी यही स्थिति विद्यमान है।

कृष्य बेकार भूमि के संदर्भ में योग जनपद (10.13%) स्तर पर धनात्मक रूपांतरण हुआ है जिसका प्रमुख कारण सिंचाई अभाव, भूमि अनुर्वरता आदि के कारण भूमि पर खेती नहीं हो पा रही है। विकासखंड चोपन (-76%) में सिंचाई सक्षमता की वृद्धि की वजह से यहां कृष्य बेकार भूमि घट रही ही शेष सभी विकासखंडों में कृष्य बेकार भूमि बढ़ रही है।

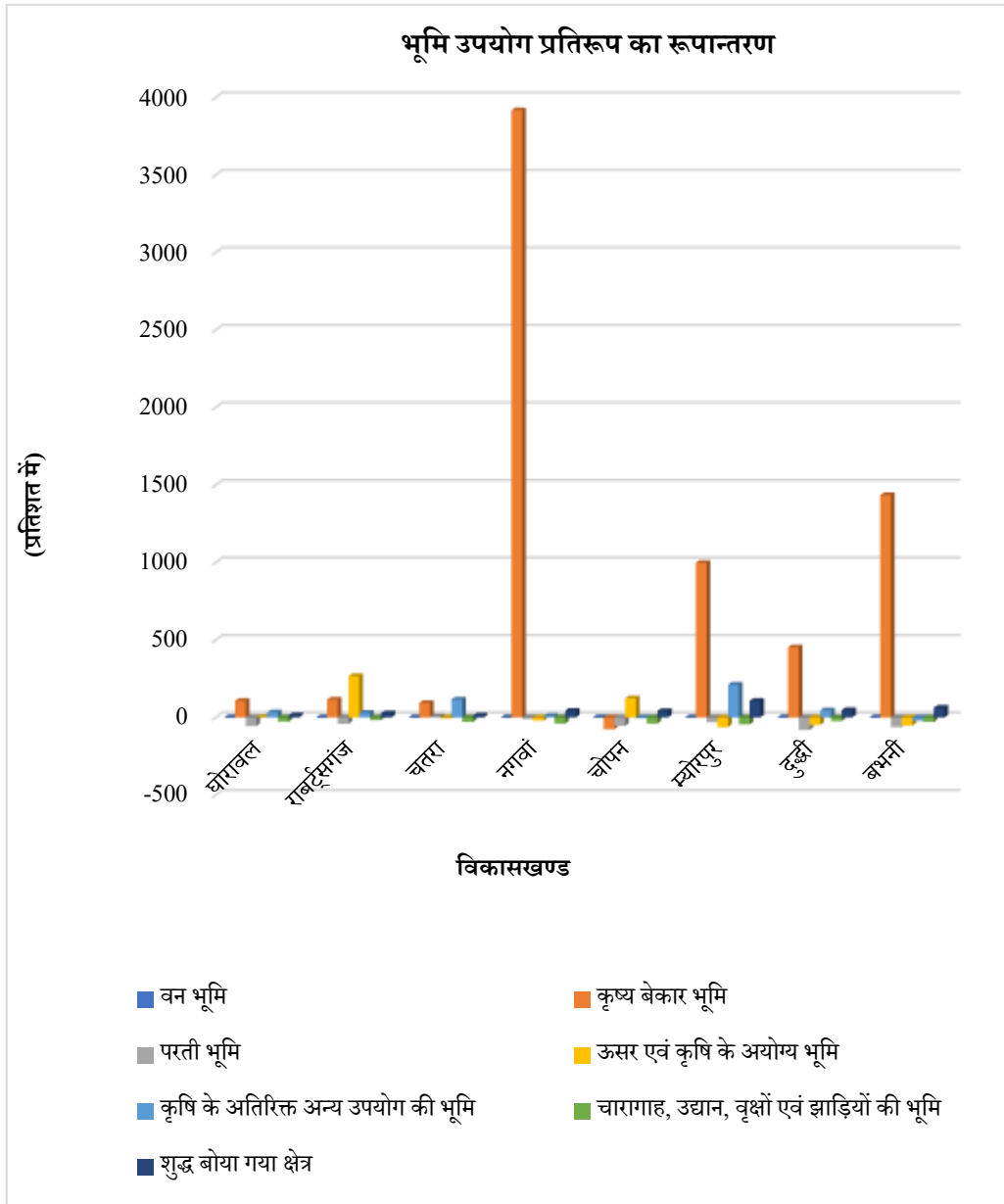
तालिका-4: जनपद सोनभद्र में विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप का रूपान्तरण (वर्ष 2009 एवं 2019)

विकासखंड	वन भूमि	कृष्य बेकार भूमि	परती भूमि	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	चारागाह, उद्यान, वृक्षों एवं झाड़ियों की भूमि	शुद्ध बोया गया क्षेत्र
	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)	(%)
घोरावल	-2.29	106.80	-55.08	1.90	32.39	-27.10	13.52
राबड़गंज	-2.17	114.67	-40.65	266.05	29.55	-17.73	25.46
चतरा	-2.19	93.16	5.75	-6.56	114.98	-29.08	12.49
नगवां	-2.18	3916.32	-9.29	-20.72	8.99	-39.79	42.47
चोपन	-2.19	-76.37	-53.99	123.20	-4.45	-39.55	40.96
म्योरपुर	-2.18	996.53	-30.78	-63.08	210.41	-45.26	106.74
दुझी	-2.18	451.41	-81.49	-49.12	45.42	-24.38	46.40
बभनी	-2.19	1433.33	-62.58	-52.89	-21.08	-29.35	62.25
योग जनपद ग्रामीण	-2.19	7.29	-47.76	1914	30.79	-36.70	38.66
योग जनपद नगरीय	0	563.79	-76.72	133	-74.43	100	49.73
योग जनपद	-2.19	10.13	-48.25	19.26	19.12	-36.68	38.67

स्रोत - स्वपरिगणित (तालिका 2 एवं 3) जिला सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, 2008-09 एवं 2018-19

परती भूमि के संदर्भ में जनपद स्तर पर (-48.25%) ऋणात्मक रूपांतरण हुआ है क्योंकि जनपद में जनदबाव बढ़ रहा है और समय के साथ बढ़ती हुई तकनीकी के प्रयोग से खाद्यान्न आपूर्ति हेतु परती भूमि का अधिक से अधिक उपयोग हो रहा है। विकासखंड चतरा (5.75%) में यह रूपांतरण धनात्मक है क्योंकि यह क्षेत्र अधिकतर जलप्लावन

की स्थिति में खेती योग्य समय से तैयार नहीं हो पाता है। शेष सभी विकासखंड में भी परती भूमि घट रही है। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के संदर्भ में जनपद स्तर पर (19.26%) धनात्मक वृद्धि हो रही है जिसका प्रमुख कारण रासायनिक खाद, उद्योग खनन के वजह से भूमि तेजी से ऊसर में परिवर्तित हो रही है। विकासखंड राबर्टगंज, घोरावल, एवं चोपन में भी धनात्मक रूपांतरण की स्थिति बनी हुई है। शेष विकासखंड चतरा, नगवा, म्योरपुर, दुल्ली एवं बभनी में ऋणात्मक रूपांतरण की स्थिति है।



ग्राफ-5: जनपद सोनभद्र में विकासखंडवार भूमि उपयोग प्रतिरूप का रूपान्तरण (वर्ष 2009-2019)

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि के संदर्भ में जनपद स्तर 19.12% का धनात्मक रूपांतरण हुआ है। जिसका प्रमुख कारण जनदबाव के परिणाम स्वरूप अध्ययन क्षेत्र में सड़क, अधिवास, सेवाकेंद्र आदि का

विस्तारीकरण है। विकासखंड चोपन एवं बभनी में यह रूपांतरण ऋणात्मक है क्योंकि यहाँ कृषि भूमि में लगातार वृद्धि हो रही है। शेष सभी विकासखंड में यह रूपांतरण धनात्मक स्थिति में है। चारागाह, उद्यान, झाड़ियों की भूमि के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद स्तर पर (-36.68%) रूपांतरण हुआ है जिसका प्रमुख कारण जनसंख्या बढ़ने से खाद्य आपूर्ति एवं आवास को पूरा करने के लिए अधिकतर भूमि को कृषि भूमि बदला जा रहा है सभी विकासखंडों में भी धनात्मक स्थिति बनी हुई है। शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद स्तर पर 38.67% धनात्मक वृद्धि हुई है। जिसका प्रमुख कारण जनपद में बढ़ता हुआ जनदबाव की वजह से खाद्यान्न आपूर्ति तथा अन्य सामाजिक आर्थिक जरूरतों को पूरा करने के लिए कृषि अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाया जा रहा है। यही धनात्मक स्थिति सभी विकासखंडों में भी बनी हुई है।

निष्कर्ष

जनपद सोनभद्र के भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन जनपद के सभी विकासखंड स्तर एवं जनपद स्तर पर भूमि उपयोग के विविध संवर्ग के दशकीय (2009 से 2019) रूपांतरण एवं रूपांतरण के कारण, प्रभाव का अवलोकन किया गया है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र जनपद सोनभद्र में जनदबाव, गतिशील आर्थिक सामाजिक आयाम, बढ़ती हुई प्रौद्योगिकी ने भूमि उपयोग के प्रतिरूप को प्रभावित किया है। जनपद में बढ़ते हुए जनदबाव के कारण वन क्षेत्र तेजी से घट रहे हैं और जनसंख्या के भरण पोषण हेतु शुद्ध बोया गया क्षेत्र में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है लेकिन जनदबाव के सापेक्ष जनपद में खाद्य आपूर्ति की चुनौती एवं आर्थिक जरूरत बनी हुई है जिसकी वजह से अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई, उन्नत बीज, उर्वरक व्यावसायिक कृषि पर ध्यान आकर्षण की आवश्यकता है जिससे जनपद का विकास एवं जन आवश्यकताओं का लक्ष्य पूरा किया जा सके।

सन्दर्भ सूची

1. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं संख्या प्रभाग, जनपद सोनभद्र, वर्ष 2008-2009 से 2018-2019
2. तिवारी, आर.सी. एवं सिंह, बी.एन. (2006): कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ. 78,89
3. पंत, बी. आर. 1992: भूमि उपयोग तथा पर्यावरण, पहाड़ 5/6, पृ. 99-105
4. वारलोव, आर. एण्ड जॉनसन, बी.डब्ल्यू. (1954): लैण्ड प्रॉब्लम एण्ड पॉलिटिसिज, मैग्राहिल बुक कम्पनी, आई.एन.सी., न्यूयार्क, पृ. 99
5. Pant B.R. 1994: Food and Nutrition: A Study of Himalayan Region, Anmol Publication Pvt. Ltd., New Delhi, 195p.
6. Pant, B.R. 1988: Land Utilization in Kotadun, Kumaun Himalaya, Ph.D Thesis, Kumaun University Nanital, p. 295.
7. Pant, B.R. and D.S.Jalal, 1992, Carrying Capacity of Land in Central Himalaya. The Geographer, 39:27-36.
8. Pant, B.R. and Jalal, D. S. (1989): Nutritional Deficiency Disease in Indian Central Himalaya, The Geographer Vol 38 (1), pp. 30-41

9. Pant, B.R., R. C. Joshi and D. S. Jalal, 1988, Land Capability Classification Model for Kotadun, Kumaun Himalaya, Geographical Review of India, 50(1):47-52.
10. Pant, B.R., R. C. Joshi and D. S. Jalal, 1991, Agricultural Landuse and Nutrition in Kotadun Kumaun Himalaya, Geographical Review of India, 53(4):8-18.